आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

पहली प्रमुख सलाह (जनवरी 01-15, 2024)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं की बुआई और अन्य पद्धतियाँ

फसल मौसम 2023-24

आगामी दिनों में वर्षा और तापमान पूर्वानुमान के संबंध में गेहूं शोधकर्ताओं और आईएमडी से मिले इनपुट के आधार पर, विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के लिए निम्नलिखित सलाह जारी की जाती हैं:

जल्दी बाली निकलना: ऐसी रिपोर्टें हैं कि कुछ क्षेत्रों में कुछ किस्मों के तहत, ध्वज पत्ता (फ्लैग लीफ) दिखाई दे रहा है और जल्दी हैडिंग आने का संकेत दे रहा है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसल पर किसी भी रसायन का छिड़काव न करें और खेत में सिंचाई कर हल्की नाइट्रोजन की मात्रा डालने का प्रयास करें।

देर से बुआई के लिए उपयुक्त किस्में: उत्तरी भारत में गन्ना, कपास, चावल, सरसों और आलू की कटाई देर से होने के कारण कुछ किसान गेहूं की बुआई बहुत देर से कर रहे हैं। अति पछेती बुआई के लिए उपयुक्त किस्में एचडी 3271, एचआई 1621, एचडी 2851, डब्ल्यूआर 544 हैं।

बीज दर (देर से बोई गई)

बहुत देर से की जाने वाले गेहूं की बुआई 18 सेमी की पंक्ति दूरी पर 50 किलोग्राम/एकड़ बीज दर का उपयोग करके की जानी चाहिए।

उर्वरक की खुराक

नाइट्रोजन की मात्रा का प्रयोग बुआई के 40-45 दिन बाद तक पूरा कर लेना चाहिए। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी स्प्रे)

• गेहूं में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी @ 160 ग्राम प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी @ 400 मिलीलीटर प्रति एकड़ लगाएं। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 2,4-डी 500 मिली/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी 8 ग्राम प्रति एकड़ या कारफेंट्राजोन 40 डीएफ 20 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

• यदि गेहूं के खेत में संकरी और चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवार हों तो पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद 120-150 लीटर पानी में सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन+मेटसल्फ्यूरॉन 16 ग्राम/एकड़ की दर से 120-150 लीटर पानी में प्रयोग करें।

• बहु शाकनाशी प्रतिरोधी फालारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) के नियंत्रण के लिए, बुआई के 0-3 दिन बाद पाइरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी 60 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें या पहली सिंचाई के 10-15 दिन बाद 120-150 लीटर पानी का उपयोग करके क्लोडिनाफॉप + मेट्रिबुज़िन 12+42% WP के तैयार मिश्रण संयोजन को 200 ग्राम/एकड़ पर स्प्रे करें।

पीला रतुआ के लिए सलाह

रतुआ के लिए अनुकूल आर्द्र मौसम को ध्यान में रखते हुए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धारीदार रतुआ (पीला रतुआ) की घटनाओं को देखने के लिए नियमित रूप से अपनी फसल का निरीक्षण करें। यदि किसान अपने गेहूं के खेतों में पीला रतुआ देखते हैं, तो निम्नलिखित उपाय सुझाए जाते हैं:

- इसके आगे प्रसार को रोकने के लिए संक्रमण क्षेत्र पर प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @ 0.1 प्रतिशत या टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी @ 0.06% का एक स्प्रे दिया जाना चाहिए।
- एक लीटर पानी में एक मिलीलीटर रसायन मिलाना चाहिए और इस प्रकार एक एकड़ गेहूं की फसल में 200 मिलीलीटर कवकनाशी को 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- जिन किसानों ने पिछले वर्ष एक प्रकार के कवकनाशी का उपयोग किया है, उन्हें इस वर्ष वैकल्पिक अनुशंसित कवकनाशी का उपयोग करने का सुझाव दिया गया है। मौसम साफ होने पर किसानों को फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

गुलाबी बेधक के लिए सलाह

गुलाबी छेदक का हमला उन क्षेत्रों में देखा गया है जहां विशेष रूप से धान, मक्का, कपास, गन्ना उगाया जाता है।

क्षति के लक्षण

गेहूं की फसल को मुख्यतः इल्लियों द्वारा क्षति होती है। कैटरपिलर तने में प्रवेश करता है और ऊतकों को खाता है। इससे फसल की प्रारंभिक अवस्था में तने में डेड हार्ट बन जाते हैं। प्रभावित पौधे पीले पड़ जाते हैं और आसानी से उखाड़े जा सकते हैं। जब पौधों को उखाड़ा जाता है तो उनकी निचली शिराओं पर गुलाबी रंग की इल्लियाँ देखी जा सकती हैं।

कीट प्रबंधन

- संक्रमित कल्लों को हाथ से चुनने और उन्हें नष्ट करने से छेदक का हमला कम हो जाता है।
- संक्रमण से बचने के लिए, नाइट्रोजन उर्वरकों को विभाजित खुराकों में उपयोग करने की सलाह दी जाती है।
- यदि प्रकोप अधिक हो तो 1000 मिलीलीटर क्विनालफॉस 25%EC को 500 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर मिलाकर छिड़काव करें।

01-15 जनवरी, 2024 के दौरान मौसम की स्थिति

उत्तर, उत्तर पूर्व और मध्य भारत में इस दौरान कोई बड़ी बारिश होने की संभावना नहीं है। सप्ताह के दौरान तापमान सामान्य रहेगा लेकिन दूसरे सप्ताह में तापमान सामान्य से अधिक हो सकता है।

01/01/24

(ज्ञानेन्द्र सिंह)
निदेशक